International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal l -Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

बौद्ध धर्म में संचित मानव मूल्य एवं चरित्र निर्माण में इनकी भूमिका

प्रतिमा तिवारी
अतिथि प्रवक्ता (शिक्षाशास्त्र विभाग),
सी0एम0पी0डिग्री कालेज, इलाहाबाद
(इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद)

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति मूल्य प्रधान व्यवहार की पोषक है। भारतीय संस्कृति में मानव मूल्यों को विशेष महत्व प्रदान किया गया है। मानव मूल्यों को चारित्रिक विशेषताओं के रूप में संदर्भित किया गया है। मानव मूल्य मानव को पशुता से भिन्न रूप में प्रदर्शित करते हैं, जिसके अन्तर्गत सत्य, सदाचार, अहिंसा, परोपकार, दया, क्षमा और कर्तव्यनिष्ठा आदि मानवीय मूल्य अत्यन्त ही विशिष्ट एवं मानवता के पोषक तत्व हैं। मानव मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं चारित्रिक गुणों के द्योतक हैं। मानव मूल्य की अवधारणा वेद, पुराण, जैन धर्म, बौद्ध धर्म सदैव प्रस्तुत दिखाई पड़ते हैं।

बौद्ध धर्म में छात्रों को बौद्ध विहारों में शिक्षा प्रदान करने से पूर्व दस सिक्खा पदानि का संकल्प कराया जाता है–

1. जीव हिंसा न करना।
2. किसी की वस्तु न लेना।
3. अशुद्ध आचरण से दूर रहना।
4. असत्य भाषण न करना।
5. मादक पदार्थों का सेवन न करना।
6. कुसमय भोजन न करना।
7. किसी की निंदा न करना।

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

8. नृत्य गायन से दूर रहना।
9. सुगन्धित व श्रृंगारिक वस्तुओं का उपयोग न करना।
10. सोना–चाँदी बहुमूल्य धातुओं का दान न लेना।

सद्चरित्र के निर्माण एवं दससिक्खा पदानि के संकल्पों को पूरा करने के लिए त्रिरत्न द्वारा शरीर की शुद्धि को आवश्यक बताया। शरीर शुद्धि के उपरांत निर्वाण प्राप्ति के लिए महात्मा बुद्ध ने आर्य आष्टांगिक मार्ग के अनुसरण का उपदेश दियाः–

1. सम्यक् दृष्टि
2. सम्यक् संकल्प
3. सम्यक् वचन
4. सम्यक् कर्म
5. सम्यक् जीव
6. सम्यक् व्यायाम
7. सम्यक् स्मृति
8. सम्यक् समाधि

भारतीय संस्कृति के अभिन्न तत्व के रूप में मानव मूल्य की उपयोगिता सद्चरित्र निर्माण में एवं सद्चरित्र को आदर्श के रूप में प्रतिस्थापित करने में अत्यन्त ही उपयोगी है। चरित्र निर्माण जन्मकाल से प्रारम्भ होकर किशोरावस्था तक तीव्र गति से संचालित होता है। किशोरावस्था तक छात्र के मानस पटल पर सत्, असत् के विचारों में परिपक्वता देखने को मिलती है। प्रौढ़ावस्था के अनुभवों के आधार पर चरित्र में परिवर्तन सूक्ष्म रूप में संभव है। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त मानव मूल्य मानव के चारित्रिक एवं आध्यात्मिक उन्नति में सदैव अमूल्य योगदान करते हैं। भारतीय संस्कृति की वसुधैव कुटुम्बकम् की विचारधारा मूल्यों की चरित्र निर्माण में भूमिका को स्पष्ट करती दिखाई प्रतीत होती है।

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डागर, डॉ0 बी0एस0(1992)–शिक्षा तथा मानव मूल्य, चंडीगढ़, हरियाणा साहित्य अकादमी।
2. जोयिस, न्यायमूर्ति एम0राम0 (1997) मानव अधिकार तथा भारतीय मूल्य, नई दिल्ली, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद।
3. राय, प्रकाश चन्द्र–भारत के अग्रणी समाज सुधारक, नई दिल्ली, सेंचुरी पब्लिकेशन्स
4. राष्ट्रीय प्रतीक, सेन्ट्रल फार कल्चरल रिसोर्स एण्ड ट्रेनिंग, 15ए द्वारका, सेक्टर–7, नई दिल्ली।